गोरखपुर में होगा साहित्य अकादमी का लेखक सम्मेलन

सम्मेलन के जरिये होगा 24 भारतीय भाषाओं का महासंगम, साहित्य अकादमी के हिंदी परामर्श मंडल की बैठक में हुआ निर्णय

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : साहित्य अकादमी के हिंदी परामर्श मंडल की बैठक सोमवार को शहर के पार्क रोड स्थित एक होटल सभागार में हुई, जिसमें गोरखपुर में समग्र साहित्यिक परंपरा के विकास के लिए लेखक सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया। अन्य कई महत्वपूर्ण निर्णयों पर भी परामर्श मंडल ने अपनी मुहर लगाई।

गोरखपुर में पहली बार हुई बैठक में हुए निर्णय के तहत लेखक सम्मेलन की तिथि अकादमी की ओर से जल्द घोषित कर दी जाएगी। इस सम्मेलन में 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों के बीच आपसी संवाद भी कायम होगा। बैठक में अकादमी के सचिव के.श्रीनिवास राव ने बताया कि अकादमी द्वारा प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की रचनाओं का संचयन प्रकाशित किया जाएगा।

कई बड़े व पुराने लेखकों पर विनिबंध प्रकाशित नहीं हुए हैं। यह परिचयात्मक व मूल्यांकनात्मक पुस्तक होती है। अकादमी वर्ष में इन लेखकों पर विनिबंध लिखवाती है। गोरखपुर की बैठक को ऐतिहासिक बनाते हुए परामर्श मंडल ने नौ लोगों के नाम प्रस्तावित करते हुए विनिबंध प्रकाशित करने का निर्णय लिया। जिन प्रमुख साहित्यकारों पर विनिबंध प्रकाशित होंगे, उनमें [illegible] मिश्र, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण, बालकृष्ण भट्ट, [illegible], गोपाल राय, [illegible] तथा [illegible] जैसे ख्यातिलब्ध नाम शामिल हैं। बैठक की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो.चित्तरंजन मिश्र ने की। बैठक में साहित्य अकादमी के संपादक हिंदी कुमार अनुपम, प्रो.सुरेंद्र दुबे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो.कमल किशोर गोयनका, केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो.नंदकिशोर पांडेय, प्रो.रेवती रमण, इंदुशेखर तत्पुरुष, [illegible], श्रीनिवास जोशी, के.के. बिड़ला फाउंडेशन के निदेशक सुरेश ऋतुपर्ण, [illegible] मौजूद रहे।

पार्क रोड स्थित एक होटल में साहित्य अकादमी नई दिल्ली की बैठक हुई • जागरण

बैठक

- गोरखपुर में पहली बार हुई बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णयों पर लगी मुहर
- प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की रचनाओं का संचयन किया जाएगा प्रकाशित
- परामर्श मंडल ने नौ लोगों के नाम प्रस्तावित कर विनिबंध प्रकाशित करने का लिया निर्णय

इन पर भी लगी मुहर

- भारतीय लोक साहित्य पर पूर्वांचल के किसी एक शहर में अकादमी की तरफ से गोष्ठी का आयोजन
- कबीर निर्वाणस्थली मगहर में गोष्ठी का आयोजन
- युवा कवि चयनित कविताओं के संकलन का होगा प्रकाशन
- दिल्ली में होगी हिंदी कहानी अनुवाद की कार्यशाला

गोरखपुर में प्राचीन साहित्यकारों की लंबी परंपरा : कुमार अनुपम

गोरखपुर : साहित्य अकादमी के संपादक कुमार अनुपम का मानना है कि गोरखपुर में प्राचीन साहित्यकारों की लंबी परंपरा है। प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी उसी परंपरा में आते हैं। प्रो.तिवारी ने साहित्य, आलोचना और अकादमी में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

कुमार अनुपम •

गोरखपुर में [illegible] कार्यक्रम व हिंदी परामर्श मंडल की बैठक का होना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि हिंदी परामर्श मंडल के सभी सदस्य साहित्य अकादमी के सामान्य परिषद के भी सदस्य होते हैं। सामान्य परिषद में सभी 24 भारतीय भाषाओं के लेखक होते हैं। अकादमी के महत्तर सम्मान का निर्णय सामान्य परिषद के सदस्य ही करते हैं। इसलिए यह सम्मान राष्ट्रीय स्तर का होता है। साहित्य अकादमी प्रो.तिवारी के [illegible] योगदान को सम्मान प्रदान कर स्वयं भी गौरवान्वित हुई है।

वरिष्ठ साहित्यकार तैयार करें नई टीम

गोरखपुर : केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष और मुंशी प्रेमचंद के साहित्य पर 32 किताबों का सृजन करने वाले प्रो. कमल किशोर गोयनका का मानना है। गोरखपुर की धरा साहित्य की दृष्टि से काफी उर्वर है। इसने देश को कालजयी साहित्यकार दिए हैं। वरिष्ठ साहित्यकारों को चाहिए कि वह इस परंपरा को कायम रखें। नए साहित्यकारों की टीम तैयार करें। [illegible] उन्होंने इसके लिए साहित्य अकादमी से जुड़े अध्यक्ष प्रो.विश्वनाथ तिवारी से आगे आने की अपील की। उन्होंने कहा सभी वरिष्ठ साहित्यकारों को अपने इस दायित्व को समझना होगा।

प्रो. कमलकिशोर गोयनका • जागरण

साहित्य को चाहिए और फिराक व विश्वनाथ : श्रीनिवास

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : भारतीय साहित्य की समृद्धि को बनाए रखने के लिए नवांकुरों को प्रोत्साहित करते रहना होगा। साहित्य अकादमी इस दिशा में अनवरत कार्य कर रही है। युवा साहित्यकारों के उत्साह को बनाए रखने के लिए अकादमी की ओर से कई कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। क्योंकि साहित्य जगत को अभी कई फिराक गोरखपुरी और विश्वनाथ तिवारी की जरूरत है। यह कहना है साहित्य अकादमी के सचिव के.श्रीनिवास राव का। अकादमी के महत्तर सम्मान में हिस्सा लेने के लिए गोरखपुर आए सचिव श्रीनिवास सोमवार को जागरण से बातचीत कर रहे थे।

के. श्रीनिवास •

हर वर्ष हो रहे 650 कार्यक्रम, छप रहीं 500 किताबें

के.श्रीनिवास ने बताया कि साहित्य अकादमी की ओर से इस समय प्रतिवर्ष 650 कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जबकि प्रतिवर्ष 500 किताबों का प्रकाशन किया जा रहा है। हर 14 घंटे में कार्यक्रम और हर 18 घंटे में किताब का प्रकाशन साहित्य को लेकर अकादमी की सक्रियता को पुष्टि है। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादमी अबतक सभी 24 भाषाओं में [illegible] करोड़ किताबों का प्रकाशन कर चुकी है, इनमें से [illegible] करोड़ पुस्तकें हिंदी भाषा की हैं।

युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने को लेकर साहित्य अकादमी की ओर से चलाए जा रहे कार्यक्रमों की चर्चा करते हुए सचिव ने कहा कि युवा साहित्य, युवा पुरस्कार, युवाकाल जैसे कार्यक्रम अनवरत चलाए जा रहे हैं। इसके अलावा ट्रैवेल ग्रांट स्कीम के तहत 40 वर्ष से कम आयु के साहित्यकारों को दूसरे प्रदेशों में भेजकर उन्हें भाषा के साहित्य की जानकारी से समृद्ध किया जा रहा है। इतना ही [illegible] युवा साहित्यकार के पहले मूल [illegible] प्रकाशित कर उन्हें रायल्टी भी दी [illegible] रही है। उन्होंने कहा कि गोरखपुर [illegible] धरती साहित्यिक दृष्टि काफी उर्वर [illegible] है। यहां के दो साहित्यकारों (फिराक गोरखपुरी व विश्वनाथ तिवारी) को महत्तर सम्मान दिया जाना और प्रो. विश्वनाथ तिवारी को अकादमी का अध्यक्ष बनाया जाना इसका प्रमाण है।

अज्ञानता से खुलता है ज्ञान का नया रास्ता : प्रो.कमल किशोर

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : अज्ञानता से ज्ञान का रास्ता खुलता है। साहित्य व्यवसाय नहीं है। यह लगन व साधना का क्षेत्र है। नई खोज होनी चाहिए। यह बातें प्रेमचंद के आधिकारिक अध्येता व केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के उपाध्यक्ष प्रो.कमल किशोर गोयनका ने कहीं। वह सोमवार को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रेमचंद पीठ के तत्वावधान में प्रेमचंद और किसान चेतना विषय पर आयोजित व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे।

प्रो.गोयनका ने अपने 40 वर्ष के अध्ययन अनुभव तथा अनवरत प्रेमचंद पर शोधकार्य को साझा करते हुए कहा कि प्रेमचंद के लेखन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उनके द्वारा सृजित साहित्य में लगभग तीन हजार से अधिक पात्र हैं। इससे ही समझा जा सकता है कि उनका कैनवास कितना व्यापक है। आज उनके छूटे कार्यों पर विवेचन करना चाहिए, जिससे हिंदी साहित्य को और व्यापकता तथा महत्ता मिलेगी।

व्याख्यान

- विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रेमचंद और किसान चेतना पर व्याख्यान
- केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के उपाध्यक्ष प्रो.कमल किशोर गोयनका ने रखे विचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अध्यक्ष प्रो.नंद किशोर पांडेय ने संस्थान द्वारा संचालित हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा शोध अध्ययन का व्यापक परिचय देते हुए बताया कि आगरा आठ शाखाएं हैं। जिसमें चार अहिंदी भाषी तथा चार हिंदी क्षेत्र में संचालित हैं। जिनके माध्यम से अभूतपूर्व कार्य किया जा रहा है।

प्रो.पांडेय ने बताया कि संस्थान [illegible] प्रयोगशाला [illegible] की [illegible] बड़ी प्रयोगशाला है।

प्रो.सुरेश ऋतुपर्ण ने विभिन्न [illegible] में हिंदी के विकास में हो रहे कार्यों [illegible] अपने अनुभवों के आधार पर [illegible] तथा [illegible] की जानकारी पर [illegible] किया। प्रो.चित्तरंजन मिश्र ने कहा [illegible] किसान संस्कृति ही सच्ची भारतीय संस्कृति है। इसलिए के बिना किसी [illegible] भारतीय संस्कृति की अवधारणा [illegible] नहीं सकती।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल राय ने व संचालन प्रो.[illegible] त्यागी ने किया। इस अवसर पर [illegible] अरविंद त्रिपाठी व प्रो.[illegible] मौजूद रहे।

हिंदी परामर्श मंडल की बैठक में निर्णय-गोरखपुर में होगा साहित्य अकादमी का लेखक सम्मेलन Gorakhpur News

Publish Date:Tue, 01 Oct 2019 10:00 AM (IST)

सम्मेलन में 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों के बीच आपसी संवाद भी कायम होगा। बैठक में अकादमी के सचिव ने बताया कि प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की रचनाओं का संचयन प्रकाशित किया जाएगा।

गोरखपुर, जेएनएन। साहित्य अकादमी के हिंदी परामर्श मंडल की बैठक शहर के पार्क रोड स्थित एक होटल के सभागार में हुई, जिसमें स्वस्थ साहित्यिक परंपरा के विकास के लिए लेखक सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया। अन्य कई महत्वपूर्ण निर्णयों पर भी परामर्श मंडल ने मुहर लगाई। सम्मेलन की तिथि अकादमी की ओर से शीघ्र घोषित की जाएगी। यह बैठक गोरखपुर मे पहली बार हुई है।

24 भारतीय भाषाओं के लेखकों के बीच आपसी संवाद होगा

सम्मेलन में 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों के बीच आपसी संवाद भी कायम होगा। बैठक मे अकादमी के सचिव के.श्रीनिवास राव ने बताया कि प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की रचनाओं का संचयन प्रकाशित किया जाएगा। अकादमी वर्ष में छह लेखकों पर विनिबंध लिखवाती है। इधर कई बड़े व पुराने लेखकों पर विनिबंध प्रकाशित नहीं हुए हैं। यह परिचयात्मक व मूल्यांकनपरक पुस्तक होती है।

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने कहा-भारतीय साहित्य को बचाने के लिए जगानी होगी जनचेतना Gorakhpur News

Publish Date:Mon, 30 Sep 2019 09:30 PM (IST)

देश भर में अंग्रेजी और अंग्रेजी में शिक्षा पर जोर है। भारतीय भाषाओं और उसके साहित्य की समृद्धि में लोगों का यह अंग्रेजी प्रेम घातक सिद्ध हो रहा है। इसका गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

गोरखपुर, जेएनएन। साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ तिवारी को उनके मूल स्थान (गोरखपुर) में महत्तर सम्मान देने की परंपरा निभाने के लिए साहित्य अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष मशहूर कन्नड़ साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार गोरखपुर शहर में थे। ज्ञानपीठ अवार्डी पद्मश्री साहित्यकार कंबार शहर में हों तो उनसे साहित्य की वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर बातचीत लाजिमी थी। उन्होंने दोनों ही मुद्दों पर खुलकर अपना पक्ष रखा।

साहित्य अकादमी के सामने इस समय यह सबसे बड़ी चुनौती

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने कहा कि अंग्रेजियत ने पूरे देश को अपने शिकंजे में ले रखा है। देश भर में अंग्रेजी और अंग्रेजी में शिक्षा पर जोर है। भारतीय भाषाओं और उसके साहित्य की समृद्धि मे लोगों का यह अंग्रेजी प्रेम घातक सिद्ध हो रहा है। इसका गंभीर प्रभाव आने वाले समय में भारतीय भाषाओं के साहित्य पर पड़ेगा। वह कमजोर होगा। ऐसे में भारतीय भाषाओं की साहित्यिक समृद्धि आगे भी बनी रहे, साहित्य अकादमी के सामने यह बड़ी चुनौती है। इसके लिए अकादमी तो हर संभव प्रयास में लगी ही है, सरकार को भी आगे आना होगा। भारतीय भाषा के साहित्य की समृद्धि को कायम रखने के लिए जनचेतना को जगाना होगा।